'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2018-20
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 22 | अंक 7 | 19 जून 2018 | कुल पृष्ठः 8 | एक प्रतिः रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

'कोई भी मत क्षत्रिय के बिना संभव नहीं'

आप सबने सात दिन इस जैन तीर्थ में बिताए हैं। जिन का अर्थ आप्त पुरुष होता है। जिन्होंने परमात्मा को पाया वे भी परमात्मा हो गए। जैन धर्म में 24 तीर्थंकर हैं, 24 ही क्षत्रिय थे। क्षत्रिय संयम, त्याग, संतोष, शौर्य का प्रतीक है। इनको निभाकर पथ पर चलने वाला परमेश्वर को प्राप्त करता है। संसार के भोगों को भोगने की समस्त क्षमताओं के होते हुए संसार की व्यथा को हरने के लिए सब छोड़कर पैदल निकलने वाला परमेश्वर को पा जाता है, ऐसा क्षत्रिय ही कर सकता है, जैन परम्परा इसे पुष्ट करती है। भगवान बुद्ध भी ऐसे ही थे। उन्होंने समस्त भोगों को छोड़कर संसार की व्यथा को हरने के लिए साहसिक कदम उठाया। शास्त्रों में प्रतिपादित इस मत को पुष्ट किया कि यह संसार दुःख का घर एवं अशाश्वत है। इस प्रकार कोई भी मत क्षत्रिय के बिना

प्रतिपादित नहीं होता। इसलिए हमें क्षत्रिय बनना ही पड़ेगा। क्षत्रिय के घर जन्म लेना मात्र ही गौरव की बात है लेकिन क्षत्रिय बनना इससे कहीं बड़े गौरव की बात है।

जैसलमेर के बरमसर गांव स्थित जैन दादावाड़ी में आयोजित बालिका माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर के विदाई कार्यक्रम को संबोधित करते हुए माननीय संघ प्रमुख श्री ने 3 जून को यह बात कही।

उन्होंने कहा कि जन्म हमारा चयन नहीं है, परमेश्वर ने जहां भेजा वहां जन्मे लेकिन जन्म के अनुसार कर्म करना, धर्म पालन करना हमारा पुरुषार्थ है। श्रेष्ठ जन्म की सार्थकता उसके अनुकूल स्वधर्म, नियत कर्म, यज्ञार्थ कर्म आदि कर परमेश्वर की ओर बढ़ना है। सात दिन पूर्व आप सभी अलग-अलग माता-पिता की संतान के रूप में यहां आईं लेकिन भाव विभोर होकर बुलावा देने वाली रजपूती के सानिध्य में रहकर हमने अनुभव किया कि हमारा वास्तविक जन्म तो अब हुआ है। जीवन सफल जब ही है जब जिस काम के लिए हमें जन्म मिला है हम उस ओर बढ़ें। हमारा जीवन परमेश्वर की ओर बढ़ने के लिए है और सात दिन में हमें सिखाया गया कि हम हमारे जीवन को व्यर्थ होने से कैसे बचा सकते हैं। पूज्य तनसिंह जी ने कहा कि परमेश्वर की ओर वही बढ़ सकता है जिसका अंतःकरण शुद्ध हो और सात दिन में हमने अतःकरण को शुद्ध करने का प्रयास किया। दुर्गणों और दोषों को हटाकर सद्गुणों एवं सद्प्रवृत्तियों को अपनाने का प्रयास किया।

(शेष पृष्ठ 5 पर)

प्रांत एवं संभाग स्तर पर बनी कार्ययोजना

श्री क्षत्रिय युवक संघ का कार्य क्षेत्र युवक-युवतियां है इसलिए संघ की कार्य योजना शिक्षा सत्र के अनुसार चलती है। संघ के ज्यादातर सामान्य प्रशिक्षण शिविर दिसम्बर तक संपन्न हो जाते हैं क्योंकि दिसम्बर के बाद परीक्षाओं का समय आ जाता है। इसलिए संघ की कार्य योजना में जुलाई से दिसम्बर तक शिविरों एवं शाखाओं को प्रधानता दी जाती है। उच्च प्रशिक्षण शिविर में दिए निर्देशों के अनुरूप इसी हेतु प्रांतीय एवं संभागीय स्तर पर सहयोगियों की बैठकें कर कार्य योजनाएं बनाई गई।

गुजरात के बनासकांठा एवं महेसाणा प्रांत की बैठक 3 जून को पाटण स्थित दाना सिंह राजपूत छात्रावास में संपन्न हुआ। बैठक में बनी कार्य योजना के अनुसार आगामी 22 दिसम्बर को संघ का नया सत्र प्रारम्भ होने से पूर्व दोनों प्रांतों में 10 प्रा.प्र.शि. लगाने की योजना बनी। बनासकांठा एवं महेसाणा प्रांत में कुल मिलाकर 60 नियमित शाखाएं लगाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया। दोनों प्रांतों में दो-दो सम्पर्क यात्राएं आयोजित की जाएगी। संघशक्ति पथ प्रेरक एवं गुजराती संघशक्ति की ग्राहक सदस्यता बढ़ाने के लिए योजना बनाई गई। प्रतिवर्ष मनाई जाने वाली जयंतियों एवं स्मरण दिवसों को मनाने की योजना बनी। स्नेहमिलन में अजीतसिंह कुणघेर, विक्रमसिंह कमाणा, करणसिंह कमाणा सहित सभी स्वयंसेवक शामिल हुए। अहमदाबाद ग्रामीण प्रांत व शहर प्रांत की बैठक अहमदाबाद पब्लिक स्कूल कैम्पस में 4 जून को संभाग प्रमुख दीवानसिंह काणेटी के निर्देशन में हुई। इसमें भी दीवानसिंह ने ग्रामीण प्रांत के सहयोगियों एवं जगतसिंह वलासणा ने शहर प्रांत के सहयोगियों के साथ बैठक कर आगामी दिसम्बर तक के शिविरों एवं शाखाओं की योजना बनाई।

(शेष पृष्ठ 5 पर)

संघ का मूल है नियमितता एवं निरंतता

हमने एक गीत गाया कि 'जीवन के अंतःस्थल में खिली फुलवारी' यही संघ का मूल है। अंतःस्थल में खिली फुलवारी के सींचन के लिए हम नियमति एवं निरन्तर कितने जुड़े रहते हैं यही महत्त्वपूर्ण है। हम 5 माह पहले यहां मिले थे तब तय किया था कि हम नियमित एवं निरन्तर इस स्थान से जुड़े रहेंगे क्यों कि यह तीर्थ स्थल है। हर तपस्थली तीर्थ स्थल होती है और यहां भी एक व्यक्ति की तपस्या अनवरत चलती रहती है इसलिए यह हमारे लिए तीर्थ स्थल है। इस प्रेरणा स्थल से हम जितने जुड़े रहेंगे उतना ही आगे बढ़ पाएंगे। हम संघ का कितना काम कर पाते हैं इससे अधिक महत्त्वपूर्ण है कि हम प्रेरणा स्त्रोत के कितने सम्पर्क में रहते हैं। वह प्रेरणा स्त्रोत यह स्थल हो सकता है, हमारे प्रांत प्रमुख, संभाग प्रमुख आदि हो सकते हैं, हमारे माननीय संघ प्रमुख श्री हो सकते हैं। इसीलिए इस सहगायन में आया है 'माली आओ नित्य सींचो,' हम माली से नियमित एवं निरन्तर रूप से कितना सम्पर्क रख पाते हैं यही महत्त्वपूर्ण है। यदि ऐसा हम कर लेंगे तो कोई भी बाधा हमें रोक नहीं पाएगी।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

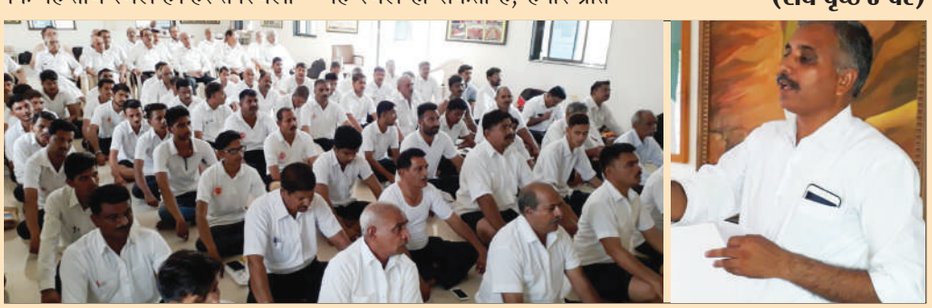

प्रणेता से प्रेरणा

पूज्य तनसिंह जी श्री क्षत्रिय युवक संघ के प्रणेता हैं। उनका जीवन हम सब स्वयंसेवकों एवं सहयोगियों के लिए प्रेरणा का स्रोत है। उनके जीवन की हर घटना हमारे लिए दिशा दर्शक है जो हमें उनके मार्ग पर बढ़ने की प्रेरणा देती है। ऐसी ही प्रेरणादायी घटनाओं का संकलन पथप्रेरक के इस कॉलम में धारावाहिक रूप से प्रकाशित किया जा रहा है।

आज हर विशिष्ट व्यक्ति अपनी विशिष्टता के बल पर विशिष्ट अधिकार चाहता है। यदि कोई विशिष्ट नहीं है तो किसी विशिष्ट से अपने संबंध की धौंस जमा कर विशिष्ट व्यवहार की अपेक्षा करता है। विशेषकर सरकारी सुविधाओं को हासिल करने में यह बात हर जगह देखी जा सकती है। लेकिन जो लोग वास्तव में विशिष्ट होते हैं वे साधारणता में आनंद की अनुभूति करते हैं और साधारणजन को विशिष्ट बनाने का प्रयास करते हैं। वास्तव में तो वे विशिष्ट क्षमताएं लेकर ही इसीलिए आते हैं ताकि साधारणजन को विशिष्ट बना सकें। पूज्य तनसिंह जी ऐसे ही व्यक्तित्व थे। उनकी आंतरिक विशिष्टता को तो हर कोई पहचान नहीं पाया लेकिन सामान्य जन जिसको विशिष्टता मानता है वे सब सांसारिक विशिष्टताएं भी उन्होंने हासिल की और वर्तमान भारतीय व्यवस्था में वीआईपी स्तर जिसे कहा जाता है उसे हासिल किया लेकिन व्यवहार में सदा साधारण बने रहे। उनके जीवन की ऐसी ही एक घटना का उल्लेख एक बार माननीय संघ प्रमुख श्री ने किया। उन्होंने बताया कि 1977 में जब पूज्य श्री दोबारा सांसद बने तो वे भी उनके साथ दिल्ली गए हुए थे। एक दिन पूज्य श्री को हृदय संबंधी कुछ समस्या हुई तो उन्हें तुरन्त राम मनोहर लोहिया अस्पताल ले जाया गया। अस्पताल में पूज्य श्री सामान्य वार्ड में जाकर लेट गए एवं साथ में गए वर्तमान संघ प्रमुख श्री ने आवश्यक कागजी कार्यवाही पूर्ण करवाई। डॉक्टर जब देखने आया तो वह फाइल पर रहने का पता देखकर चौंका। उसने पूछा कि तुम नार्थ एवेन्यू में रहते हो? पूज्य श्री ने उत्तर दिया 'हां'। डॉक्टर को विश्वास नहीं हुआ। वह बोला कि तुम वहां कैसे रह सकते हो, वहां तो सांसद रहते हैं। साथ में गए वर्तमान संघ प्रमुख श्री ने परिचय देते हुए बताया कि आप सांसद ही हैं इसलिए वहां रहते हैं। यह सुनते ही डॉक्टर हतप्रभ रह गया एवं पूज्य श्री से वीआईपी वार्ड में शिफ्ट होने का आग्रह किया। पूज्य श्री सहज भाव से उस आग्रह को स्वीकार कर डॉक्टर के साथ वीआईपी वार्ड में चले गए। यह था उनका सहज एवं साधारण जीवन। ऐसे ही सहज एवं साधारण जीवन के कारण वे जीवन की समस्त प्रतिकूलताओं एवं अनुकूलताओं में अप्रभावित रहते हुए अपने जीवन ध्येय पर अडिग रहे एवं हमारे जैसे लाखों लोगों को जीवन ध्येय पर अग्रसर होने का मार्ग बता कर गए।

जीवनोपयोगी जानकारी-7

- अभयसिंह रोडला

उड्डयन क्षेत्र (Aviation Sector)

इस अंक में हम उड्डयन क्षेत्र (Aviation Sector) में कॅरियर निर्माण के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे। आर्थिक एवं तकनीकी विकास के साथ-साथ इस क्षेत्र में कुशल पायलट, इंजीनियर आदि की मांग निरन्तर बढ़ती जा रही है, क्योंकि मध्यम वर्ग की आर्थिक क्षमता बढ़ने से उसकी पहुंच विमान सेवाओं के क्षेत्र में बढ़ी है और इस क्षेत्र में व्यापक मांग निर्मित की है, जिसकी पूर्ति में रोजगार के अवसर निरन्तर बढ़ रहे हैं। उड्डयन क्षेत्र में सैन्य तथा व्यावसायिक, दोनों क्षेत्रों में अनेकों रोजगार उपलब्ध हैं, जिनमें कॉमर्शियल पाइलट, मिलिट्री पायलट, क्रू मेम्बर, एयर होस्टेस, एयर क्राफ्ट, मैकेनिक एवं एयरक्राफ्ट डिजाईनर आदि सम्मिलित है। विमान निर्माण एवं डिजाईन के क्षेत्र में विशेषज्ञता प्राप्त करने के लिए एयरोनॉटिकल तथा एयरोस्पेस इंजीनियरिंग की जानकारी पूर्व में दी जा चुकी है। अब हम उड्डयन क्षेत्र के सबसे लोकप्रिय एवं प्रतिष्ठित कॅरियर पायलट के बारे में जानेंगे। कॅरियर की दृष्टि से इस क्षेत्र में दो विकल्प उपलब्ध हैं।

1. कॉमर्शियल पायलट। 2. सैन्य पायलट।

1. कॉमर्शियल पायलट : यह नागरिक उड्डयन का क्षेत्र है। भारत में कॉमर्शियल पायलट लाइसेंस जारी करने के लिए नागरिक उड्डयन महानिदेशालय (DGCA) प्राधिकृत है। पायलट बनने के लिए सर्वप्रथम गणित, भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान के साथ 12वीं कक्षा में 50 प्रतिशत अंक (न्यूनतम) प्राप्त करने अनिवार्य हैं। इसके पश्चात् फ्लाइंग स्कूल में प्रवेश के लिए (DGCA) द्वारा आयोजित प्रवेश परीक्षा को क्वालिफाई करना होता है, जिसमें लिखित परीक्षा एवं पायलट एप्टीट्युड टेस्ट सम्मिलित है। प्रवेश परीक्षा क्वालिफाई करने के पश्चात् (DGCA) द्वारा अधिकृत केन्द्र पर अभ्यर्थी का चिकित्सकीय परीक्षण होता है, जिसके लिए काफी कड़े मानक तय होते हैं। चूंकि एक कॉमर्शियल पायलट अपने साथ सैंकड़ों व्यक्तियों को लेकर उड़ान भरता है, जिनके जीवन की सुरक्षा उसकी जिम्मेदारी होती है, साथ ही विमान के सभी क्रू मेम्बर्स का नेतृत्व भी उसे करना होता है।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

'गुरु शिखर से' (विविध विषयों का कॉलम)

कवि का विरुद्ध

स्वरूपसिंह जिंझनियाली

सन् 1311 में अल्लाहउद्दीन खिलजी ने जैसलमेर के सुदृढ़ दुर्ग को फतह करने के लिए नवाब कमालुद्दीन के नेतृत्व में भारी सेना भेजी। उस समय जैसलमेर पर महारावल दूदा भाटी (दुर्जनशाल जसौड़) का शासन था। यवन सेना ने दुर्ग पर घेरा डाल दिया पर वे दुर्ग को जीत नहीं सके। कई दिनों के घेरे में रहने से दुर्ग में रसद सामग्री की कमी आ गई। अन्त में खिलजी को सेना से दो-दो हाथ करने के लिए रावल दूदा के नेतृत्व में भाटी सरदारों ने किले के द्वार खोल दिए और अपने कुछ ही सैनिकों के साथ खिलजी की विशाल सेना पर टूट पड़े। रावल दुर्जनशाल (दूदा) और उसके छोटे भाई त्रिलोकसी ने शाही सेना में हाहाकार मचा दिया। अन्ततः भाटी राजपूत सेना के अनेकों वीरों के साथ रावल दूदा एवं तिलोकसी इस युद्ध में काम आए। सिन्ध थारपारकर की रावल दूदा की पटरानी सोढ़ीजी के सानिध्य में सतियों ने जौहर किया। यह जैसलमेर का दूसार शाका था। रावल दूदा की एक महारानी मारवाड़ के खींवसर की लाखण दे मांगलियाणी थी जो इस युद्ध के जौहर शाके के समय अपने पीहर में थी। वह खींवसर से तुरन्त जैसलमेर पहुंची। उसने शाके में काम आए अपने पति रावल दुर्जनशाल की देह के साथ सती होने की इच्छा प्रकट की। युद्ध में रावल जी का शीश धड़ से अलग हो गया था। उनका केवल धड़ ही युद्ध क्षेत्र में मिल पाया था। सहस्त्रों मुण्डों के मध्य उनका सिर ढूंढ पाना मुश्किल हो रहा था। केवल धड़ के साथ रानी अपने उद्देश्य में सफल नहीं हो पा रही थी। अतः सिर को ढूंढने का काम रावलजी के विश्वासपात्र एवं मित्र चारण हूंफा (हूंफकरण सांदू) को दिया गया। समरांगण में जाकर डिंगल कवि हूंफा ने हजारों नरमूंडों के मध्य खड़े होकर बिरदावली (कविता) करनी प्रारम्भ की।

'सांदू हेफे सेविया, साहब दुरजण सल्ला।
बिड़दां माथो बोलियो, गीतां दुहां गल्ल।।'

इस तरह गीतों एवं दुहों के द्वारा सांदू हूंफा ने जो कवित किया जिससे सहस्त्रों मुण्डों के मध्य रावल दूदा का सिर जैसे मुस्करा पड़ा और उसकी पहचान हो गई। रावल दूदा (दुजरन साल) के सिर के मिलने की घटना पर कवि ने सुन्दर कल्पनातीत अभिव्यक्ति दी है।

'होता जो पग हाथ, उठ र सांमो आवतो।
मिलतो बाथों बाथ, हिय मिलाय हूपड़ा।।'

अर्थात रावल जी का शीश चारण कवि हूंफा सांदू को कह रहा है कि मेरे पांव और हाथ नहीं है वरना उठकर आपके सामने आता और हृदय से लगाकर तुम्हें अपनी बांहों में भरकर स्वागत करता।

सांदू हूफकरण मस्तक को लेकर राणी के पास गए एवं अपने चारणत्व का परिचय दिया। शिशोदणी राणी लखमण दे मांगलियाणी रावल जी के शीश को धड़ से जोड़कर सती हो गईं।

जैसलमेर के इस दूसरे शाके और उसके राजा दूदा एवं तिलोकसी की बहादूरी गाथा इतिहास में अद्वितीय है।

अपराधियों में आदर्श खोजती युवा पीढ़ी

तनुज सिंह बाढां की ढाणी

विगत दिनों सोशल मीडिया में एक खूंखार अपराधी के जन्मदिन के अवसर पर समाज के युवाओं द्वारा उसका महिमामंडन करना एक चिंतनशील सामाजिक प्राणी को अंदर तक झकझोरता है एवं कई प्रश्न खड़े करता है। युवा पीढ़ी राष्ट्र की रीढ़ है। प्रत्येक व्यक्ति या वर्ग अपनी अगली पीढ़ी को लेकर चिंतित है। वे अपने बालकों के समक्ष अनेकानेक महापुरुषों के जीवन वृत सुनाकर उनके लिए आदर्श स्थापित करते हैं। बचपन से ही उन्हें इस प्रकार की कहानियां सुनाई जाती है ताकि आने वाली पीढ़ी उनसे प्रेरणा लेकर परिवार एवं समाज का नाम रोशन कर सके। लेकिन जिस प्रकार अल्प समय में बहुत कुछ पाने की चाह ने हमारी युवा पीढ़ी के आदर्शों का प्रतिस्थापन किया है उससे आदर्शों और नैतिकता का स्तर दुर्भाग्यपूर्ण रूप से गिरा है, वह चिंताजनक है। हमारे समाज में एक से बढ़कर एक आदर्श हुए। पूर्वजों द्वारा हर क्षेत्र में बांधी सीमाओं को संसार आज तक छू नहीं पाया है। लेकिन आज उसी समाज के कुछ युवा एक अपराधी के जन्मदिन पर कोटि-कोटि नमन, वीर शिरोमणी, अमर रहे आदि संबोधन कर उसमें अपना आदर्श ढूंढ रहे हैं। ऐसे में प्रश्न उठता है कि क्या हमने हमारी युवा पीढ़ी के साथ बैठना छोड़ दिया है? क्या हमारे घरों से प्रारम्भ होने वाला संस्कार निर्माण पूर्णतया कुंद हो गया है? अपराधियों के महिमामंडन की यह नई हवा हमें किधर ले जा रही है, क्या हमने कभी शांति से बैठकर विचार किया है? किसी के अपराध जगत में आने के कारण भी क्या उचित ठहराए जा सकते हैं? क्या इस कारण उसके अपराध क्षम्य हो जाते हैं कि वह किसी से प्रताड़ित होकर अपराधी बना? अपराधी के महिमामंडन में उसकी समाज हितैषी की छवि गढ़ने वाले क्या बता सकते हैं कि उसके अपराध के कारण समाज के कितने लोगों का घर उजड़ा? क्या अपराधी अपराध करने से पूर्व अपने पराए का भेद करता है? क्या जिसका महिमामंडन हो रहा है उसने ऐसा किया? **(शेष पृष्ठ 4 पर)**

प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर संपन्न

गैलाना

गनोड़ा

गढ़ी प्रतापपुर

उच्च प्रशिक्षण शिविर के बाद प्राथमिक प्रशिक्षण शिविरों की श्रृंखला प्रारम्भ हो गई है। इसी कड़ी में मध्यप्रदेश के मंदसौर जिले की सुवासरा तहसील के गैलाना गांव में 28 से 31 मई तक एक शिविर संपन्न हुआ जिसमें गैलाना, बोरखेड़ी, रुपारेल, गोवर्धनपुरा, किशोरपुरा, कुंताखेड़ी, देवरिया विजय, अंगारी, कचनारा, बरड़िया, घसोई आदि गांवों के 104 युवाओं ने प्रशिक्षण लिया। शिविर का संचालन केन्द्रीय कार्यकारी प्रेमसिंह रणधा ने किया। उन्होंने बताया कि संघ हमें हमारी पहचान कराने के लिए आया है। हमारे स्वधर्म एवं दायित्व को याद दिलाने आया है एवं उसके निर्वहन के योग्य बनाने के लिए आया है। शिविर की व्यवस्था में महेन्द्रसिंह फतेहगढ़, दयालसिंह सेदरा करनाली, शिवपालसिंह ढाबला देवल, विक्रमसिंह ढाबला भगवान, सुमेरसिंह व करणसिंह घसोई, नाहरसिंह अंगारी, रघुवीरसिंह, ईश्वरसिंह देवरिया विजय आदि ने सहयोग किया।

देसू

इसी प्रकार बांसवाड़ा जिले के गनोड़ा गांव की लिटिल एंजल्स स्कूल में प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर संपन्न हुआ जिसमें बांसवाड़ा व डूंगरपुर जिले के 100 से अधिक युवाओं ने प्रशिक्षण लिया। शिविर का संचालन भगतसिंह बेमला ने सहयोगियों सहित किया। अंतिम दिन विदाई के बाद स्नेहमिलन रखा गया जिसमें निकट के गांवों के समाजबंधु शामिल हुए। इस शिविर में लांबापारडा, गनोड़ा, काका जी का गड़ा, चिरावला, गड़ा, सुन्दनी, बदलिया, गोपीनाथ का गड़ा, रोहनिया लक्ष्मणसिंह, नौगामा, कोटड़ा, वनवासा, उदयुरिया, बाठेड़ा, सज्जनसिंह का गडा, ओडवाड़िया, पादर,बड़ी सादड़ी, दौलतसिंह का गड़ा, आदि गांवों के स्वयंसेवकों ने प्रशिक्षण लिया।

इसी कड़ी में बांसवाड़ा के गढ़ी प्रतापपुर में 7 से 10 जून के बीच बालिकाओं का प्रा.प्र.शि. आयोजित हुआ जिसमें चित्तौड़गढ़, भीलवाड़ा, उदयपुर, बांसवाड़ा व डूंगरपुर जिलों में विभिन्न स्थानों से 100 से अधिक बालिकाओं ने प्रशिक्षण लिया। शिविर का संचालन लक्ष्मीकंवर खारड़ा ने वरिष्ठ स्वयंसेवक गंगासिंह साजियाली के निर्देशन में किया। प्रतापगढ़ के कुणी गांव में 3 से 6 जून तक बालकों का प्रा.प्र.शि. संपन्न हुआ जिसका संचालन भंवरसिंह बेमला ने किया। इस शिविर में प्रतापगढ़ जिले के विभिन्न गांवों के क्षत्रिय बालकों ने प्रशिक्षण लिया। नागौर संभाग के ईडवा गांव में 7 से 10 जून के मध्य बालकों का प्रा.प्र.शि. वरिष्ठ एवं वयोवृद्ध स्वयंसेवक शिवबक्षसिंह चुई के सानिध्य में सम्पन्न हुआ। शिविर का संचालन नत्थूसिंह छापड़ा ने किया।

7 से 10 जून के मध्य ही मध्यप्रदेश के नीमच जिले के आंतरी गांव स्थित आंतरी माता मंदिर में शिविर हुआ जिसका संचालन केन्द्रीय कार्यकारी गजेन्द्रसिंह आऊ ने किया। शिविर में मालवा प्रांत के अलावा वागड़ एवं मेवाड़ के शिविरार्थी भी शामिल हुआ। शिविर संचालक ने कहा कि संघ पतनोन्मुखी प्रवाह में समाज को कर्तव्य मार्ग पर आरूढ़ करने का दीर्घसूत्रीय कार्य कर रहा है। पूज्य तनसिंह जी के इसी स्वप्न को साकार करने को संघ ऐसे मेले लगा रहा है। नरेन्द्रसिंह, गुलाबसिंह, दशरथसिंह आदि आंतरी गांव के समाज बंधुओं ने शिविर की व्यवस्था का जिम्मा संभाला। 10 से 13 जून के मध्य जालोर संभाग के देसू गांव में बालकों का प्रा.प्र.शि. संपन्न हुआ जिसमें देसू, देवकी, बोकड़ा, महेशपुरा, सरूपपुरा, बेदाणा, मोरुआ, चरली, पांचोटा, आकोली, चांदणा, काणदर, धवला, मांडाणी सहित करीब 20 गांवों के स्वयंसेवकों ने प्रशिक्षण लिया। स्वयंसेवकों को बताया गया कि सच्चा क्षत्रिय दूसरों से पहले स्वयं को जीतता है और उसके लिए स्वयं से लड़ने की कला सीखनी आवश्यक है। संघ अपने आप से लड़कर संसार को जीतने की क्षमता अर्जित करवाने का अभ्यास करवाता है। चक्रवर्तीसिंह देसू व ईश्वरसिंह देसू ने गांववासियों के सहयोग से व्यवस्था संभाली।

आंतरी

ईडवा

कुणी गांव

श्री करणी छात्रावास सरदारशहर

श्री करणी छात्रावास सरदारशहर की स्थाई समिति एवं संरक्षक मंडल की एक आवश्यक बैठक 20 मई को कानसिंह बोघेरा की अध्यक्षता में आयोजित हुई। सर्व सम्मति से विक्रमसिंह बिल्यु को पुनः पांच वर्ष के लिए अध्यक्ष बनाया गया। अध्यक्ष ने आय-व्यय एवं विकास का ब्यौरा प्रस्तुत किया। समिति सदस्यों द्वारा व्यवस्था संबंधी पारित प्रस्ताव में कहा गया कि अध्यक्ष की अनुमति से छात्रावास में श्री क्षत्रिय युवक संघ की शाखा लगाई जाती है, शिविर आयोजित किया जाए या क्षत्रिय समाज की किसी संस्था द्वारा कोई कार्यक्रम आयोजित हो तो समिति के किसी भी सदस्य को आपत्ति नहीं होगी। छात्रावास में जन प्रतिनिधियों द्वारा निर्मित हॉल व कमरों का जुलाई 2018 में लोकार्पण करवाने का निर्णय लिया गया। समाज के बालक-बालिकाओं द्वारा प्राप्त उत्तम परीक्षा परिणाम पर उन्हें सम्मानित करने का भी प्रस्ताव लिया गया। कार्यक्रम के अध्यक्ष कानसिंह बोघेरा ने छात्रावास में पुस्तकालय-वाचनालय हेतु एक लाख रुपए देने की घोषणा की। उन्होंने छात्रावास प्रबन्धन तथा विकास हेतु अमूल्य सुझाव दिए। अलग समय देकर बालकों से एक घंटे तक अपना कॅरियर बनाने हेतु मार्ग दर्शन भी उन्होंने दिया।

श्री हिम्मत छात्रावास मैनेजिंग कमेटी की बैठक

नागौर जिले के डीडवाना के राजपूत सभा भवन में श्री हिम्मत छात्रावास मैनेजिंग कमेटी के सदस्यों की बैठक 3 जून को रखी गई जिसमें रामसिंह बरड़वा को निर्विरोध अध्यक्ष मनोनीत किया गया। नए अध्यक्ष को 7 दिन में नई कार्यकारिणी गठित करने का निर्देश दिया गया। बैठक में लगभग 500 सदस्यों ने भाग लिया। प्रति तीन वर्ष में अध्यक्ष का निर्वाचन होता है जो आज तक निर्विरोध होता आया है। नवनियुक्त अध्यक्ष ने छात्रावास में संख्या बढ़ाने एवं व्यवस्था को और उन्नत करने का आश्वासन दिया।

संपादकीय

500 में से 499

बोर्ड परीक्षाओं के परिणाम आ रहे हैं। परिणामों में कुछ विद्यार्थियों के प्राप्तांकों का प्रतिशत 99 से ऊपर रहा है। एक आंकड़ा तो 500 में से 499 का भी आया अर्थात पांच विषयों में 100-100 नम्बर के प्रश्न पत्रों में से केवल 1 अंक कटा है अर्थात चार विषयों में तो शत प्रतिशत अंक हासिल किए हैं। अनेक विषयों में शत प्रतिशत अंक हासिल करने वालों की संख्या तो बहुत अधिक है। हिन्दी, अंग्रेजी या अन्य भाषाओं में भी शत प्रतिशत अंक हासिल करने के समाचार अखबारों में प्रकाशित होते हैं। पूर्व में गणित जैसे गणनात्मक विषय में शत प्रतिशत अंकों के बारे में यदा कदा सुना जाता था लेकिन अब तो वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक विषयों में भी शत प्रतिशत अंकों के उदाहरण बहुतायत मिल जाते हैं। इन उदाहरणों एवं समाचारों को सुनकर प्रथम दृष्टया तो सुखद अनुभूति होता है कि नई पीढ़ी की बुद्धि का स्तर बढ़ा है लेकिन क्या वास्तव में ऐसा है? क्या परीक्षाओं में मिलने वाले अंक बढ़ते बौद्धिक स्तर के परिचायक हैं या कहानी कोई और है। यदि वास्तव में ऐसा है तो पिछली पीढ़ियों का बौद्धिक स्तर क्या आज से न्यून था जब प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण होना भी बड़ी बात मानी जाती थी? क्या उस समय की प्रथम श्रेणी का कोई महत्त्व नहीं रह गया क्योंकि आज तो 90 प्रतिशत भी वैसी अनुभूति नहीं देता? ऐसे में प्रश्न यह भी उठता है कि क्या विश्लेषणात्मक, वर्णनात्मक एवं तार्किक विषयों में भी शत प्रतिशत या 90 प्रतिशत से अधिक लाना सामान्य बात हो सकती है? यदि इन प्रश्नों का उत्तर खोजने जाएंगे तो पाएंगे कि वास्तव में बौद्धिक स्तर में उतना अंतर नहीं आया जितना परीक्षा प्रणाली में आ गया है। वर्तमान समय सूचनाओं के संग्रहण मात्र का रह गया है। परीक्षा का मतलब उन सूचनाओं को याद रखने की क्षमता की जांच मात्र रह गया है। इसीलिए आज के प्रश्न पत्रों में वस्तुनिष्ठ प्रश्नों की भरमार होने लगी है। पिन पोईंटेड उत्तर वाले प्रश्नों को महत्त्व दिया जाता है। एक या दो पंक्ति में सूचनाओं को उड़ेलने वाले प्रश्नों को प्रश्न-पत्रों की सामग्री बनाया जा रहा है। आज के प्रश्न पत्रों में कल्पनाशीलता को जांचने वाले प्रश्नों का अभाव होता है। आज के प्रश्न-पत्रों में तार्किक एवं विश्लेषणात्मक प्रश्नों का अभाव होता है और ऐसे में मांगी गई सूचनाओं को रटकर 500 में से 499 अंक लाना आसान हो जाता है। इस प्रकार हम सबको इस सुखद अनुभूति का अवसर मिल जाता है कि हमारे आने वाली पीढ़ी का बौद्धिक स्तर बढ़ रहा है। लेकिन यह अनुभूति वास्तव में सुखद नहीं है। यह बौद्धिक स्तर बढ़ नहीं रहा बल्कि कुंद हो रहा है। नई पीढ़ी की तर्क करने की क्षमता कुंद हो रही है। विश्लेषण करने क्षमता कुंद हो रही है। उनकी कल्पनाशीलता कुंद हो रही है ऐसे में 90 प्रतिशत से अधिक अंक लाने वाले का जब जीवन की व्यवहारिक समस्याओं से सामना होता है तो वह अपने आपको असहाय पाता है। एक सेमेस्टर में 90 प्रतिशत लाने वाले को पिछले सेमेस्टर में क्या पढ़ा इसकी जानकारी नहीं रह पाती। इस प्रकार की परीक्षाओं में अव्वल रहने वाले लोग दर्शन शास्त्र की पुस्तकें भी जीवन दर्शन को दिशा देने के लिए नहीं बल्कि परीक्षा पास करने के लिए पढ़ते हैं इसलिए परीक्षा तो पास कर लेते हैं लेकिन जीवन दिशा विहीन रह जाता है। इसीलिए आज की परीक्षाओं में अव्वल रहने वाले लोग इंजीनियर, मैनेजर, डॉक्टर तो बन जाते हैं लेकिन इंसान नहीं बन पाते क्योंकि इंसानियत को समझने, समझाने एवं विश्लेषण करने की क्षमता उसमें विकसित ही नहीं हो पाती। जीवन पथ की ऊंचाइयों की कल्पना उनके लिए दूर की कौड़ी होती है इसलिए उनका जीवन खाने, सोने एवं की बोर्ड तक सीमित होकर रह जाता है। अतः हम संसार की तरह भले ही इस बात के लिए प्रसन्न हो लें कि आपकी आने वाली पीढ़ी ने 90 प्रतिशत या अधिक अंक प्राप्त किए हैं लेकिन साथ ही इस बात के लिए भी विचार कर क्रियाशील होवें कि उसकी सृजनशीलता कुंद न होवें उसकी कल्पनाशीलता एवं तार्किकता भी विकास की ओर अग्रसर होवे। वह विश्लेषण संश्लेषण करने की क्षमता भी हासिल करे और इन सबके लिए आपको वर्तमान शिक्षा प्रणाली निराश करती है क्योंकि प्रणाली को बनाने वाले नहीं चाहते कि आम लोगों में तार्किकता बढ़े, विश्लेषण संश्लेषण की क्षमता बढ़े क्योंकि ऐसा होने पर उनको कई जवाब देने पड़ेंगे। ऐसे में यदि आप अपनी नई पीढ़ी को लेकर चिंतित है तो पूज्य तनसिंह जी प्रदत्त पाठशाला श्री क्षत्रिय युवक संघ आपका स्वागत करने को तत्पर है जो केवल विश्लेषण, संश्लेषण, तार्किकता, कल्पना शीलता तक ही नहीं उससे आगे के मार्ग पर भी हमारी आने वाली पीढ़ी को अग्रसर कर

अपराधियों... (पृष्ठ दो का शेष)

क्या उसके अपराध के शिकार हमारे समाज बंधु नहीं रहे? आनंदपाल की मौत के बाद सीबीआई जांच का समर्थन करने वालो में मैं भी था। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि उसके अपराधों को भूला दिया जाए। वह समर्थन इंसानियत के नाते समर्थन था कि एक परिवार द्वारा अपने एक सदस्य की मौत की जांच की मांग की जा रही थी और सरकार दादागिरी पूर्वक उसे ठुकरा रही थी। वह समर्थन केवल और केवल उस परिवार की मात्र उस एक मांग का समर्थन था और साथ ही कुछ अपरिपक्व लोगों द्वारा उस मांग के समर्थन में बनाए गए हिंसक वातावरण को रोककर उसे उचित संवैधानिक तरीके के तहत उठाने तक था ताकि जोशीले युवाओं के भविष्य को मुकदमों से बचाया जा सके। लेकिन आज जो लोग उसकी आपराधिक गतिविधियों को महिमामंडित कर रहे हैं क्या वे चाहेंगे कि उनके परिवार का कोई सदस्य अपराधी बने? जब वे अपने परिवार के सदस्यों को हत्यारे, लूटेरे, किडनैपर आदि के रूप में नहीं देखना चाहते तो समाज के युवाओं को क्यों उधर धकेलना चाहते हैं? ऐसे में हर संजीदा समाज बंधु का दायित्व है कि वह समाज के युवाओं के आपराधिक लोगों की ओर प्रवाह को रोके, उनके सामने समाज के उच्चादर्शों को स्थापित करे। उन्हें इस बात से अवगत करवाते हुए सचेत करे कि यह मार्ग हमारा कभी नहीं रहा। हमें समाज रक्षक के रूप में स्वीकारता है और वही हमारी समीचीन भूमिका है। किसी हार्डकोर अपराधी का महिमामंडन हमारे गौरवशाली पूर्वजों का अपमान है और हमारे युवा साथी अनायास ही बिना सोचे समझे इस अपमान को अंजाम दे रहे हैं।

खरी-खरी

समर्थन विरोध के संकेत

चार वर्ष पूर्व बनी मोदी सरकार के प्रति समर्थन एवं विरोध को लेकर आज राष्ट्र के लोगों के बीच एक अजीब एवं मूर्खतापूर्ण सी खाई नजर आती है जो देश के भविष्य के लिए दुर्भाग्यपूर्ण कही जा सकती है। राजनीति के गलियारों में एक नया शब्द 'भक्त' बड़ी तेजी से उभर कर आया है और आजकर बड़े जोर-शोर से प्रचलित हो रहा है। भक्त शब्द एक पवित्र शब्द है जो अपने आराध्य के प्रति पूर्ण समर्पण की स्थिति की ओर यात्रा को परिभाषित करता है लेकिन जब यही शब्द किसी लोकतांत्रिक देश में किसी राजनीतिक दल या व्यक्ति विशेष के अनुयायियों के लिए प्रयुक्त होता है तो यह वर्तमान में प्रचलित लोकतांत्रिक शासन की अवधारणा की स्वस्थ स्थिति का परिचायक तो नहीं है लेकिन फिर भी इस बात का कौन नकार सकता है कि वर्तमान में भारत की राजनीति में यह शब्द प्रचलित हुआ है और बड़े जोर-शोर से प्रयुक्त हो रहा है। विगत दिनों पेट्रोलियम पदार्थों की बढ़ी हुई कीमतों को लेकर सरकार समर्थकों की टिप्पणियों ने तो यह पुष्ट भी कर दिया है कि देश में इस प्रकार की प्रजाति की उपस्थिति है। जब कोई सरकार समर्थक पेट्रोलियम पदार्थों की बढ़ी हुई कीतमों में सरकार का बचाव करते हुए यह तर्क देता कि टमाटर 100 रुपए किलो थे अब 10 रुपए ही रहे हैं, बचे हुए 90 रुपए का पेट्रोल खरीद लो तो ऐसे तर्क देने वाले को किस उपमा से नवाजा जाएं? बात पेट्रोल की बढ़ती कीमतों की हो रही हो और भाव मोबाइल डाटा या सीमेंट के बताए जाएं, दालों के बताए जाए और उनके माध्यम से सरकार का बचाव करने का प्रयास किया जाए तो इस प्रकार के समर्थकों को किस श्रेणी में रखा जाए? एक अच्छे समर्थक का यह दायित्व होता है कि वह अपने नेता की गलत बातों का विरोध कर उसे चेताए लेकिन यहां तो जब आम समर्थक येनकेन प्रकारेण उसे सही सिद्ध करने का प्रयत्न करता है और इसके लिए बचकाने तर्क प्रस्तुत करता है तो निश्चित रूप से यह स्वस्थ लोकतंत्र की निशानी नहीं है। लेकिन जितना ये समर्थक भक्त की श्रेणी में है उतना ही विरोधी भी केवल विरोध के लिए विरोध कर इसी प्रकार की मिलती-जुलती श्रेणी में परिवर्तित हो जाते हैं। सरकार के हर अच्छे बूरे काम की केवल बुराई ही करना भी स्वस्थ लोकतांत्रिक परम्परा नहीं है। आज सरकार ने निश्चित रूप से जितने सब्जबाग दिखाए थे उतना नहीं किया है लेकिन कुछ नहीं किया यह नितांत अस्वीकार्य है। अनेक मोर्चों पर सरकार ने अपने प्रदर्शन से देश को गौरवान्वित होने का अवसर प्रदान किया है। इस सरकार से पहले ऐसी स्थिति बन गई थी कि भारत में भारतीयता पराई सी लगने लगी थी, उस भारतीयता को पुर्नस्थापित करने के प्रयास मंथर गति से ही सही लेकिन प्रारम्भ हुए हैं। देश की राजनीति में सांप्रदायिक दृष्टिकोण के कारण एक बड़ा वर्ग जहां किनारे सा लग गया था आज वह वर्ग सभी राजनीतिक दलों के केन्द्र में आया है। इस प्रकार यह सरकार भी पहले वाली सरकारों की तरह एक सरकार ही है जिसकी अच्छाई बुराई दोनों ही है इसलिए हमें किसी भी प्रकार के अंध विरोध या अंध भक्ति की अपेक्षा एक स्वस्थ लोकतंत्र के जागरुक एवं जिम्मेदार नागरिक की भांति अच्छी बातों का समर्थन एवं कमियों का विरोध करना चाहिए। देश की वर्तमान व्यवस्था के स्वास्थ्य के लिए यह आवश्यक भी है अन्यथा सत्तासीन लोग हमारे अंध समर्थन या अंध विरोध के सहारे कहीं हमारी ही स्वतंत्रता में बाधक न बन जाएं क्यों कि ऐसा होने पर ही आपातकाल लागू होते हैं या तानाशाही पनपती है। इसलिए आएं सरकार को एक नागरिक के रूप में देखें और यदि वह अंतराष्ट्रीय बाजार में तेल की कीमतों के भाव गिरने के कारण देश में पेट्रोल सस्ता होने का श्रेय लेती है तो उसे भाव बढ़ने के लिए भी जिम्मेदार होने का अहसास करवाएं।

कोई भी... (पृष्ठ एक का शेष)

अंतःकरण की शुद्धि सद्कर्मों से होती है और सद्कर्म क्या है आप जानती नहीं है लेकिन संघ में आकर हमारी इस ओर यात्रा प्रारम्भ तो हुई। हमने संसार को मार्ग दिखाने वाली कौम में जन्म लिया और फिर संघ में आकर उस क्षमता को हासिल करने की ओर कदम बढ़ाया, नर्सरी में ही सही भर्ती तो हुए क्योंकि स्कूल में भर्ती ही न हो तो पी.एच.डी. नहीं की जा सकती। लेकिन यहां आकर क्षात्रभाव नहीं आया, संसार के प्रति करुणा नहीं जगी तो आना सार्थक नहीं हुआ। इसलिए शिविरों की संख्या पर्याप्त नहीं है बल्कि यहां आकर जितना प्रयत्न, संयम एवं तत्परता रखी उतना ही पाया है। गीता में पाने की तीन शर्तें हैं श्रद्धा, तत्परता एवं इन्द्रियों का संयम। पहली आवश्यकता तो जो बताया जा रहा है उसमें श्रद्धा होनी आवश्यक है। फिर इस ओर चलने की तत्परता चाहिए और तीसरी आवश्यकता इन्द्रियों का नियंत्रण है अन्यथा हम तत्पर रह नहीं पाएंगे। तीनों मिलकर ही आगे बढ़ाते हैं। आपने सात दिन में जो पाया उसे खोये नहीं। जन्म और मरण से जीवन समाप्त नहीं होता बल्कि हमारे कर्म जीवन शृंखला बनाते हैं। उसी प्रकार स्वागत एवं विदाई महत्त्वपूर्ण नहीं है बल्कि यहां जो अभ्यास करवाया गया उसे अपनाना महत्त्वपूर्ण है। जागरुकता पूर्वक शिविर करते रहेंगे तो यह आना-जाना, जन्म-मरण, स्वागत-विदाई मिट जाएगा। हमे यह जीवन संसार को दुःखों से छुटकारा दिलाने के लिए मिला है, ऐसा किए बिना चले गए तो जीवन व्यर्थ चला जाएगा। 20 वर्ष पूर्व बालिकाओं में काम प्रारम्भ किया तो यह प्रश्न था कि इस काम को करने वाली महिलाएं कहां से आएगी लेकिन इस शिविर के बाद लगता है कि आप तैयार हो रही हैं, पुरुषों के सहयोग की बहुत कम आवश्यकता है। लेकिन आवश्यक है कि आप स्वयंसेविका बनें। जो स्वयं की सेवा नहीं कर सकता वह संसार की सेवा नहीं कर सकता। तनसिंह जी ने हमें खुला रास्ता बताया है कि भगवान के सौंपे काम को करने से ही भगवान मिलेगा। इसलिए जो पाया है उसे आचरण में लाएं। संयमपूर्ण जीवन जीएं, अंतर में पवित्रता लाए, आंखों में आंसू नहीं अंगारे लाएं।

28 मई से 3 जून तक चले इस शिविर में राजस्थान एवं गुजरात के विभिन्न जिलों की 210 से अधिक बालिकाओं ने प्रशिक्षण लिया। शिविर का संचालन जागृति कंवर हरदासकावास ने रश्मि कंवर देलदरी, संतोष कंवर सिसरवादा, उषा कंवर पाटोदा, विष्णु कंवर कालेवा, मीना कंवर आकूड़ा, मैना बा, कल्पना बा, रीटा कंवर देवलिया आदि के सहयोग से किया। रामसिंह माडपुरा, गंगासिंह साजियाली पुरुष सहयोगी के रूप में उपस्थित रहे। माननीय संघ प्रमुख श्री 1 जून से 3 जून तक शिविर में रहे। 1 जून को उन्होंने शिविरार्थी बालिकाओं को भगवान कृष्ण, भगवान व्यास, महाराजा जनक आदि महापुरुषों एवं विभिन्न ऐतिहासिक उदाहरणों के माध्यम से श्रेष्ठता हासिल करने की आवश्यकता बताई। सदैव जागृति की आवश्यकता बताई। शिविर में 29 जून को जैन दादाबाड़ी संस्था के संचालक आए और उन्होंने शिविर के अनुशासन एवं मर्यादापूर्ण व्यवस्था को सराहा। शिविर के अंतिम दिन विदाई के पश्चात जैसलमेर के समाज बंधुओं का स्नेहमिलन रखा गया जिसमें जैसलमेर के पूर्व राजघराने की सदस्या लक्ष्मी रासेश्वरी देवी ने कहा कि माता निर्माता एवं ममता व त्याग की प्रतिमूर्ति है। संघ द्वारा महिलाओं के लिए किए जा रहे ऐसे प्रयास की सराहना की। स्नेहमिलन में विधायक छोटूसिंह भाटी, पूर्व विधायक सांगसिंह, दिलीपसिंह नारायणबाग, देवीसिंह बरमसर, अभयसिंह झिंझनियाली, वीरेन्द्रसिंह लोहारकी, सवाईसिंह पिथला आदि उपस्थित रहे। स्नेहमिलन का संचालन तारेन्द्रसिंह झिंझनियाली ने किया। शिविर की व्यवस्था का जिम्मा जैसलमेर के समाज बंधुओं ने उठाया एवं संभाग प्रमुख गोपालसिंह रणधा अपनी टीम सहित शिविर की व्यवस्था में संलग्न रहे।

प्रांत एवं संभाग... (पृष्ठ एक का शेष)

नोखा, कोलायत प्रांत की बैठक 3 जून को संभाग प्रमुख गुलाबसिंह आशापुरा के आवास पर संपन्न हुई जिसमें चारणवाला एवं छनेरी प्रा.प्र.शि. के प्रस्ताव स्वीकार किए गए। आशापुरा, हिन्दुपुरा, भालुरी, जागनवाला, बिजेरी, गोकुल आदि स्थानों पर शाखाओं को नियमित रखने की योजना बनाई गई। भवानीसिंह मूंगरिया, सरदारसिंह, हणवंतसिंह सहित क्षेत्र के सभी स्वयंसेवक बैठक में उपस्थित रहे।

जालोर संभाग की बैठक केन्द्रीय कार्यकारी प्रेमसिंह रणधा के निर्देशन में जालोर प्रांत प्रमुख गणपतसिंह भंवराणी के आवास पर 4 जून को संपन्न हुई। बैठक में संभाग के सभी 6 प्रांतों के स्वयंसेवक उपस्थित हुए। बैठक का संचालन संभाग प्रमुख अर्जुनसिंह देलदरी ने किया। इस बैठक में पूरे संभाग में आगामी उ.प्र.शि. तक 21 प्रा.प्र.शि एवं 1 मा.प्र.शि. लगाने के प्रस्ताव तैयार किए गए। इनमें से तीन शिविर जून माह में ही करना तय हुआ। जुलाई माह में संघशक्ति पथप्रेरक की ग्राहक सदस्यता के लिए अभियान चलाने का निर्णय लिया एवं इसके लिए 31 जुलाई तक के लक्ष्य लिए गए। विगत छह माह के कार्य की समीक्षा की गई। शिविरों में सहयोगी के रूप में जाने वालों के नाम तय किए गए। प्रांत वार चल रही एवं संभावित शाखाओं की सूची बनाई गई। केन्द्रीय कार्यकारी प्रेमसिंह रणधा ने नियमित रूप से संघ का साहित्य पढ़ने पर जोर दिया क्योंकि उससे ही संघ समझ में आएगा। प्रकोष्ठों के कार्य की योजना बनाई गई। जयपुर संभाग का स्नेहमिलन 5 जून को केन्द्रीय कार्यालय संघशक्ति में रखा गया जिसका संचालन संभाग प्रमुख विक्रमसिंह सिंघाणा ने किया। पूरे संभाग में 15 प्रा.प्र.शि. लगाने का लक्ष्य लिया गया। उ.प्र.शि. में प्राप्त संघ शक्ति पथ प्रेरक की ग्राहक सदस्यता के लक्ष्य को प्राप्त करने की योजना बनाई गई। प्रति शनिवार सायं संघशक्ति में बैठक रखने का भी निर्णय लिया गया। जयंती एवं सम्पर्क यात्राओं को लेकर भी चर्चा की गई। चल रही शाखाओं की समीक्षा की गई एवं नई शाखाओं की संभावना तलाशी गई।

मेहसाणा

जोधपुर संभाग की बैठक 9 जून को संभाग प्रमुख महेन्द्रसिंह गुजरावास के आवास पर रखी गई जिसमें वरिष्ठ स्वयंसेवक शंकर सिंह महरोली, नारायणसिंह माणकलाव सहित संभाग के स्वयंसेवक शामिल हुए। संभाग के चारों प्रांत (शेरगढ़, बालेसर, जोधपुर शहर व भोपालगढ़) के स्वयंसेवक अलग-अलग बैठे एवं आगामी दिसम्बर माह तक के शिविर, शाखाएं, संघशक्ति, पथप्रेरक की ग्राहक सदस्यता, प्रकोष्ठों का कार्य, सांघिक पर्वों, जयंतियों, उत्सवों आदि को लेकर कार्य योजना बनाई। संभाग में कुल 18 शिविरों के प्रस्ताव आए जिनमें 15 बालक प्रा.प्र.शि., 2 बालिका प्रा.प्र.शि. व 1 बालक मा.प्र.शि. शामिल है।

गुजरात के सभी प्रांतों एवं संभागों के स्वयंसेवकों ने 9 जून की शाम से लेकर 10 जून तक गुजरात में संघ कार्य को लेकर कार्य योजना बनाई। केन्द्रीय संचालन प्रमुख लक्ष्मणसिंह बेण्यांकाबास के सानिध्य में हुई इस बैठक में 9 जून की शाम को उ.प्र.शि. से आए स्वयंसेवकों ने अपने अनुभव सुनाए। इसके बाद भजन संध्या आयोजित हुई जिसमें वरिष्ठ स्वयंसेवक अजीतसिंह धोलेरा ने भजनों के आध्यात्मिक अर्थ समझाए। 10 जून को प्रातः सामूहिक यज्ञ के बाद सभी प्रांत प्रमुखों ने अपनी-अपनी कार्ययोजना प्रस्तुत की। इस वर्ष के लिए 41 प्रा.प्र.शि. व 2 मा.प्र.शि. लगाने तय किए। सूरत प्रांत ने 4 प्रा.प्र.शि. अलग से तय किए। पूर्व में लग रही शाखाओं को नियमित रखने के साथ-साथ 45 नई शाखाएं चिह्नित की गई। संघ शक्ति, पथप्रेरक एवं गुजराती क्षत्रिय संघशक्ति के ग्राहक सदस्यता के लक्ष्य लिए गए। केन्द्र से निवेदन कर इस वर्ष अहमदाबाद में बड़े स्तर पर 22 दिसम्बर को स्थापना दिवस मनाने की अनुमति लेने का निर्णय भी लिया गया। इसके अलावा महापुरुषों की जयंतियां, पर्व, यज्ञोपवीत कार्यक्रम आदि के आयोजन की भी योजना बनाई गई। कार्यालय की व्यवस्था आदि विषयों पर भी चर्चा हुई।

13 जून को पोकरण संभाग की बैठक संभाग प्रमुख सांवलसिंह सनावड़ा के निर्देशन में रखी गई जिसमें फलोदी एवं पोकरण के प्रांत प्रमुखों एवं सहयोगियों ने कार्य योजना को अन्तिम रुप दिया। इसी प्रकार नागौर संभाग के कुचामन प्रांत की बैठक वरिष्ठ स्वयंसेवक भगवतसिंह सिंघाणा व संभाग प्रमुख शिम्भूसिंह आसरवा निर्देशन में 12 जून को संपन्न हुई जिसमें आगामी छह माह की कार्य योजना को अन्तिम रूप दिया गया।

शिविर सूचना

क्र.सं.	शिविर	समय	स्थान मार्ग आदि
1.	प्रा.प्र.शि.	23.06.2018 से 26.06.2018 तक	**कारोला** जिला जिला जालोर।

शिविर में आने वाले युवक काला नीकर, सफेद कमीज या टीशर्ट, काली जूती या जूता व युवतियां केसरिया सलवार कमीज, कपड़े के काले जूते, मौसम के अनुसार बिस्तर (एक परिवार से दो जने हों तो अलग-अलग), पेन, डायरी, टॉर्च, रस्सी, चाकू, सूई-डोरा, कंघा, लोटा, थाली, कटोरी, चम्मच, गिलास साथ लेकर आवें। संघ साहित्य के अलावा कोई पत्र-पत्रिका, पुस्तकें एवं बहुमूल्य वस्तुएं साथ ना लावें। उच्च प्रशिक्षण शिविर में आने वाले मेरी साधना पुस्तक साथ लेकर आवे।

राजेन्द्रसिंह बोबासर, शिविर कार्यालय प्रमुख

जोधपुर

भजन किसका करें? - 6

महाकुम्भ के अवसर पर चण्डीद्वीप (हरिद्वार) में दिनांक 10.04.1983 ई. की जनसभा में परमपूज्य स्वामी श्री अड़गड़ानन्दजी का प्रवचन। 'भजन किसका करें' नामक छोटी सी पुस्तक में संग्रहित है। उसी पुस्तक को धारावाहिक रूप से यहां छापा जा रहा है। प्रस्तुत है गतांक से आगे का भाग।

(ण)

करोड़ों-करोड़ों देवी-देवता उस परमतत्व परमात्मा के अंशमात्र हैं। कागभुशुण्डिजी कहते हैं- **'रामु काम सतकोटि सुभग तन। दुर्गा कोटि अमित अरि मर्दन।' (7/90/7)**- भगवान अरबों कामदेवों के समान सुन्दर हैं। करोड़ों-करोड़ों दुर्गा के तुल्य शत्रु का नाश करने में सक्षम हैं। **'सारद कोटि अमित चतुराई।'**- अनन्त कोटि सरस्वतियों के समान वे चतुर हैं। **'बिधि सतकोटि सृष्टि निपुनाई।' (7/91/5)**- अरबों ब्रह्मा के समान सृष्टि-रचना में निपुण हैं। **'विष्णु कोटिसम पालनकर्ता। रुद्र कोटिसत सम संहर्ता।' (7/91/6)**- पालन करने में करोड़ों विष्णु के समान और संहार में अरबों रुद्र के समान हैं। करोड़ों इन्द्र के समान उनका ऐश्वर्य है, अरबों कुबेर के समान धनवान हैं और अरबों कामधेनु के समान इच्छित पदार्थों को देने में सक्षम हैं। करोड़ों-करोड़ों सूर्य भी जिनके सामने जुगनू के समान हैं, फिर भी हम पूजा सूर्य की करते हैं प्रभु की नहीं। आप उस मूल को क्यों नहीं पकड़ते जिसके ये सभी नगण्य अंशमात्र हैं। **'तुलसी मूलहि सेइए फूलइ फलइ अघाइ।'** मूल की सेवा करेंगे तो फल-वृक्ष-पत्ते-फूल-टहनी सब आपके हैं और पत्ते-पत्ते दौड़ते रहेंगे तो वृक्ष से (मूल परमात्मा) से भी हाथ धो बैठेंगे। देवताओं में, पत्थर में, पानी में, पशु और पक्षियों में कल्याण के नाम पर अमूल्य समय नष्ट न करें। किसी पर एहसान नहीं, स्वयं अपना उद्धार करें।

(त)

देवी-देवताओं की तो नहीं, हां शकरजी की पूजा आरम्भ में भरतजी करते थे। राम के राज्याभिषेक को लेकर जब अयोध्या में षड्यंत्र प्रारम्भ हुआ, तब भरतजी ननिहाल में थे। रात में इन्हें भयंकर स्वप्न दिखाई पड़ने लगे। मन दुश्चिन्ताओं से भरा था। इनके शमन हेतु **'बिप्र जेवांइ देहिं दिन दाना। शिव अभिषेक करहिं बिधि नाना।' (2/156/7)** भरत जी ब्राह्मण-भोजन कराते थे, दान देते थे, अनेक प्रकार से शंकर का अभिषेक करते थे। **'मागहिं हृदयं महेस मनाई। कुसल मातु पितु परिजन भाई।' (2/156/8)** हृदय से शंकरजी को भली प्रकार मनाकर मांगते थे कि माता कुशल से रहे, पिता कुशल से रहे, भाई और परिजन सभी सकुशल रहे।

मिला क्या? पिताजी स्वर्गलोक चले गए, माता विधवा हो गईं, भाई वन चले गए और सात दिन बाद जब तक भरत अयोध्या नहीं पहुंच गए, किसी के घर चूल्हे तक नहीं जले थे। तो क्या भगवान शिव की पूजा भी गलत है? नहीं, **'शिव सेवा कर फल सुत सोई। अबिरल भगति राम पद होई।' (7/105/2)** आदिगुरु भगवान शिव की सेवा का एक मात्र फल यही है कि राम के चरण-कमल में अविरल भक्ति जागृत हो जाए। भगवान शिव अपनी भक्ति से इतने सन्तुष्ट नहीं होते, वह जब भी सन्तुष्ट होते हैं राम की भक्ति से सन्तुष्ट होते हैं। छोटी-मोटी याचनाओं पर ध्यान न देकर उन्हें भगवान राम का अप्रतिम भक्त बना दिया। जो भगवान शंकर का कर्तव्य था, उसका उन्होंने निर्वाह कर दिखाया। इसके पश्चात् भरतजी ने आजीवन राम की अविरल भक्ति में समय दिया, शिव में नहीं।

ऐसा ही उदाहरण कागभुशुण्डिजी का है। अपने पिछले जन्म में वे भगवान शिव के अनन्य सेवी थे, अन्य सबके विरोधी थे। उनके गुरु दयालु थे, नीति-निपुण थे। बताते रहते थे कि शिव की सेवा का फल भगवान राम के चरणों की भक्ति है- उनका यह उपदेश काग भुशुण्डि जी को अच्छा नहीं लगता था। वे उन गुरुदेव की अवहेलना करने लगे। एक दिन कागभुशुण्डिजी शिव के मंदिर में बैठकर शंकरजी का नाम जप रहे थे। गुरुदेव आए किन्तु कागभुशुण्डिजी ने उठकर प्रणाम नहीं किया। गुरुदेव तो कोमल-शील स्वभाव वाले थे, किन्तु गुरु का अपमान स्वयं शंकरजी भी सहन न कर सके। अजगर बन जाने, हजारों जन्म लेने और मरने का शाप मिल गया। जिन शंकरजी का वे पक्ष लेते थे वे ही शिव रुष्ट हो गए। गुरु महाराज को बड़ी करुणा आई। भगवान शिव से अनुग्रह की, प्रार्थना की। शंकरजी सन्तुष्ट हुए। बोले, जन्म तो इसे लेना ही होगा किन्तु जन्म और मृत्यु की असहनीय पीड़ा इसे नहीं होगी। किसी भी जन्म में इसका ज्ञान नहीं मिटेगा और अन्त में यह मनुष्य-शरीर में राम की भक्ति प्राप्त करेगा। थे तो वे शिव के भक्त, लेकिन शंकरजी प्रसन्न हुए तो क्या दिया? राम की भक्ति। अन्तिम जन्म में उनके **'मन ते सकल बासना भागी। केवल राम चरन लय लागी।' (7/109/6)** शिव-सेवा का फल **'अबिरल भगति राम पद होई।'** राम के चरणों में लव लग गई फिर भक्ति जागृत हो गई।

(थ)

भारत में आज भी शिव-पूजा प्रतिष्ठित है। भगवान शिव के मन्दिर बहुतायत से हैं। यदि वहां यह बताया जाए कि भगवान शिव ने किस अभीष्ट को पाया था? उनकी विद्या क्या थी? उन्होंने कैसे तपस्या की? उन्होंने क्या सन्देश दिया? हम उसे कैसे प्राप्त करें?- तो वह मन्दिर सार्थक है। केवल इतना ही सीखने आप वहां जाते हैं। जहां यह न बताया जाता हो कि महापुरुष ने उस सत्य को कैसे प्राप्त किया? तो वहां जाने से आपकी क्षति होगी, लाभ कभी नहीं होगा। केवल चरणामृत बांटने वाला मन्दिर कुछ भी नहीं है, धोखा है। भगवान शिव की शरण में जो गया, उसे उन्होंने राम के चरणों में सौंप दिया (प्रीति दी)। वे सदैव राम-नाम जपते थे-

तुम्ह पुनि राम राम दिन राती। सादर जपहु अनंग आराती।
(1/107/7)

कासीं मरत जन्तु अवलोकी।
जासु नाम बल करउं बिसोकी। (1/118/1)

काशी में शंकरजी अपने पराक्रम से मुक्ति नहीं देते, बल्कि नाम के बल से ही मोक्ष प्रदान करते हैं। एक परमात्मा के चिन्तन पर ही शंकरजी ने बल दिया।

ठीक इसी प्रकार, हनुमान एक सन्त थे। उनके भी जप का नाम राम था। **'सुमिरि पवनसुत पावन नामू। अपने बस करि राखे रामू।।' (1/25/6)** पवनसुत ने उस परम पावन राम-नाम का जप किया था। हनुमान-हनुमान जपने के लिए हनुमान ने कभी नहीं कहा। उनके जीवन में जो भी अधिकारी भक्त मिला, उन्होंने उसकी बांह पकड़ राम के चरणों में गिरा दिया।

हनुमान सम नहिं बड़भागि नहिं कोउ राम चरन अनुरागी।
(7/49/8)

हनुमान के समान भाग्यशाली कोई नहीं था। तो भाग्य का स्रोत क्या है? **'नहिं कोउ राम चरन अनुरागी।'** - राम के चरणों का अनुराग ही भाग्य का जन्मदाता है।

इन दोनों महापुरुषों के कथानकों से स्पष्ट है कि देवताओं में कुछ महापुरुष भी हैं जो हमारे-आपके पूर्वज रहे हैं, किन्तु करोड़ों कल्पित देवताओं के बीच उनकी संख्या एक प्रतिशत भी नहीं है। उनके प्रति श्रद्धा अपेक्षित है, क्योंकि उन्होंने किसी काल में साधन करके परमात्म स्वरूप की स्थिति प्राप्त किया था। अपनी पीढ़ी के लिए वे सद्गुरु थे, किन्तु आज के लिए उनकी पूजा का विधान नहीं है और न उनके नाम-जप का। यदि कोई ऐसा करता भी है तो वे महापुरुष एक परमात्मा की ओर तथा व्यक्ति के समकालीन सद्गुरु की ओर उसे बढ़ा देते हैं। अतः आप आरम्भ से ही एक परमात्मा के प्रति श्रद्धा स्थिर करें जिससे आपका समय नष्ट न हो और उनसे प्रेरणा लेते रहे।

(द)

गोस्वामीजी ने रामचरित मानस की रचना की तो अन्त में मानस रोग भी बताए कि इसके विरोधी कौन है। **'मोह सकल व्याधिन्ह कर मूला।' (7/120/29)** - मोह सम्पूर्ण व्याधियों का मूल है। काम वात है, कफ लोभ है, क्रोध पित्त है। काम, क्रोध और लोभ तीनों भाई जब एक हृदय में, एक स्थान पर इकट्ठे हो जाते हैं तो व्यक्ति सन्निपात के रोगी की तरह हैं। **'अहंकार अति दुखद डमरुआ।'**, **'तृस्ना उदर वृद्धि अति भारी।'** इस प्रकार पन्द्रह-पच्चीस रोगों का चित्रण किया और अन्त में बताया- **'मानस रोग कछुक मैं गाए।'** हैं तो सबके पास लेकिन कोई विरला ही इन्हें पहचान पाया। तो भला इन रोगों से मुक्ति किस तरह से मिलेगी? इस पर कहते हैं :

सद्गुरु बैद बचन बिस्वासा। संजम यह न विषय कै आसा।।
रघुपति भगति संजीवन मूरी। अनूपान श्रद्धा मति पूरी।।
एहि बिधि भलेहिं सो रोग नसाहीं। नाहिं त जतन कोटि नहिं जाहीं।।
(7/121/6-8)

सद्गुरु ही वैद्य हैं, उनके वचनों में पूरी श्रद्धा हो। भगवान की भक्ति (देवी-देवता की भक्ति नहीं, केवल भगवान की भक्ति) यही संजीवनी जड़ी है। अनुपान के लिए सद्गुरु में पूरी श्रद्धा हो। इस विधि से भले ही रोग नष्ट हो जाए अन्यथा करोड़ों यत्न करें तब भी नहीं जाएगा। जिस यत्न से रोग दूर होगा ही नहीं उसे आप करते क्यों हैं? उन प्रभु की भक्ति क्यों नहीं करते, जिससे ये मानस रोग नष्ट होते हैं?

(ध)

अब तक आपने समझ लिया होगा कि हमारा-आपका इष्ट कौन है? इष्ट उसे कहते हैं जो हमें अनिष्टों से बचा ले। अनिष्ट कहते हैं क्षति को, नुकसान को। दैनिक जीवन में छोटे-बड़े नुकसान तो होते ही रहते हैं। किसी के सिर में दर्द है, सर्विस में बाधा आ गई, कहीं गाड़ी लड़ गई- इत्यादि परेशानियां आती रहती हैं. इसी प्रकार लाखों प्रकार की कामनाएं मनुष्य के अन्दर भरी रहती हैं। जो इन तमाम अनिष्टों से बचा लें, कामनाओं की पूर्ति कर दे, उसका नाम है इष्ट।

सब कुछ सुरक्षित हो जाने और समृद्ध जीवन प्राप्त हो जाने पर भी शरीर तो क्षणभंगुर है। आज है तो कल के लिए कोई गारंटी नहीं दे सकते। यह नश्वर है। योगेश्वर श्रीकृष्ण का कहना है कि, अर्जुन। यह आत्मा ही शाश्वत है और शरीर नाशवान् है। **'अनित्यमसुखं लोकमिमं प्राप्य भजस्व माम्।' (गीता, 9/33)**- तब तो आपका वैभव-विलास यहीं छूट जाएगा। काल बरबस घसीटकर उठा ले जाएगा। क्या कोई ऐसा भी उपाय है कि इस जन्म और मृत्यु से भी पार पा लें? वह कौन है जो इस भयंकर अनिष्ट से बचाकर हमें शाश्वत स्वरूप प्रदान कर दे, अकाल स्थिति प्रदान कर दे, शाश्वत धाम प्रदान कर दे, सदा रहने वाली अक्षय शान्ति दे दे? इसमें यदि कोई सक्षम है तो एक मात्र परमपत्त्व परमात्मा, शाश्वत ब्रह्म। उसका परिचायक नाम 'राम' है। उसका जप करें वही इष्ट है। **(क्रमशः)**

(पृष्ठ एक का शेष)

संघ का मूल...

गुजरात के संघ कार्यालय 'शक्ति धाम' में आयोजित कार्य योजना बैठक को संबोधित करते हुए संचालन प्रमुख लक्ष्मणसिंह बेण्यांकाबास ने उपर्युक्त बात कही। उन्होंने कहा कि हमारे शरीर, संघ, संस्था, आत्मा को निरन्तर सींचन आवश्यक है। मैंने प्रतिदिन संघ का कितना काम किया, संघ का चिंतन कितना किया इसका संकल्प ही हमें आगे बढ़ाएगा। मैं माननीय संघ प्रमुख श्री का संदेश लेकर आया हूं कि गीता कहती है कि जो देवताओं को पूजता है वह देवताओं जैसा, प्रेत को पूजने वाला प्रेत जैसा एवं पितरों को पूजने वाला पितरों जैसा होता है। हम क्या हैं? यह हमारे लिए विचारणीय है। हमें संघ ने आगे लाकर खड़ा कर दिया है ऐसे में अगली पीढ़ी हमें देखती है, हम जैसे होंगे वैसी ही अगली पीढ़ी होगी। हम अपने आप में सोचें कि हम देवता, प्रेत या पितर में से क्या हैं और जैसे हम हैं वैसी ही आने वाली पीढ़ी होगी। संघ का काम मेरा काम है और इसे मुझे ही करना पड़ेगा, दूसरा करे उसमें संघ का काम नहीं हो सकता, उससे मेरी प्रगति नहीं होगी। नियमित एवं निरन्तर रूप से मिलने से हमारा प्रेम एवं जुड़ाव बढ़ेगा और उसी से काम होगा। आज का मिलन जिस प्रकार हमें प्रेरणा दे रहा है उसी प्रकार हर मिलन देगा इसलिए मिलना जारी रहना चाहिए। सम्पर्क बार-बार किया जाना चाहिए। सम्पर्क ही सक्रिय रखेगा। सक्रियता में ही योजनाएं धरातल पर आती हैं। सहयोगी भाव को बनाकर प्रेरणा ज्योति को लेकर जाएं। सम्पर्क टूटने पर दिग्गज ढह जाया करते हैं, इसलिए सम्पर्क ही आधार है।

राघवेन्द्रसिंह पुत्र विक्रमसिंह गुगड़वार, हाल निवासी जयपुर। सीबीएसई 10वीं में 91 प्रतिशत।

स्वरूप कंवर पुत्री रिड़मलसिंह राठौड़, तनसिंहपुरा (दांता), बाड़मेर सीबीएसई 10वीं में 93 प्रतिशत।

नैंसी कंवर शेखावत पुत्री विक्रम सिंह माणकलाव सीबीएसई 10वीं में 94.60 प्रतिशत।

भूपेन्द्रसिंह पुत्र राजेन्द्रसिंह लिखमीसर (चुरु) सीबीएसई 10वीं में 90.51 प्रतिशत।

धीरज कंवर पुत्री दौलतसिंह राठौड़ दुजार 10वीं आरबीएसई में 92.17 प्रतिशत।

कुलवीरसिंह सांकड़ा पुत्र मैराजसिंह सांकड़ा आरबीएसई 10वीं परीक्षा 94.33 प्रतिशत। जिले में चौथा स्थान।

संतोष कंवर पुत्री देरावर सिंह सांकड़ा आरबीएसई 10वीं की परीक्षा में 87.83 प्रतिशत।

नीतेश कंवर जोधा पुत्री भवानी सिंह भाद्राजून आरबीएसई की 10 परीक्षा में 92.83 प्रतिशत अंक हासिल किए है।

धनराजसिंह पुत्र मंगलसिंह उदावत आरबीएसई की 10वीं में 90.83 प्रतिशत अंक हासिल किए।

अशोकसिंह पुत्र माधोसिंह छानेरी आरबीएसई 10वीं की परीक्षा में 94.17 प्रतिशत।

महेन्द्रसिंह पुत्र पर्वत सिंह सेखाला आरबीएसई 10वीं की परीक्षा में 87 प्रतिशत।

जसवंतसिंह पुत्र जगमालसिंह गोलड़ का तला (बाड़मेर) आरबीएसई 10वीं की परीक्षा में 80.33 प्रतिशत अंक हासिल किए।

लक्ष्मणसिंह पुत्र चनणासिंह राजमथाई आरबीएसई 10वीं की परीक्षा में 93.50 प्रतिशत।

किशनसिंह पुत्र फतेहसिंह आकवा (जालोर) 10वीं आरबीएसई में 82 प्रतिशत अंक हासिल किए।

शिशुपालसिंह पुत्र कानसिंह कोटड़ा आरबीएसई 10वीं की परीक्षा में 85.50 प्रतिशत ।

सौरभ प्रतापसिंह पुत्र महेन्द्रसिंह गुजरावास, 12वीं विज्ञान वर्ग में 84.45 प्रतिशत।

आयुषी कंवर चौहान पुत्री जयपालसिंह आडवाड़ा (जालोर) आरबीएसई 12वीं कला वर्ग में 86.60 प्रतिशत।

प्रीतम कंवर पुत्री मालमसिंह धवेचा खेतलावास (जालोर) आरबीएसई 12वीं कला में 90.60 प्रतिशत।

प्रतिभाएं

कक्षा 10वीं व 12वीं के परिणाम आ गए है। समाज के अनेक होनहारों ने अच्छा परिणाम लेकर अपने परिवार एवं समाज का नाम रोशन किया है। ऐसे विद्यार्थियों की सूचना निरन्तर मिल रही है। पथ प्रेरक को प्राप्त ऐसी सूचनाओं का संकलन प्रस्तुत है।

औंकारसिंह पुत्र रावतसिंह सैलोड़िया (बाड़मेर) आरबीएसई 12वीं कला में 79.40 प्रतिशत। यह छात्र मोहन गुरुकुल छात्रावास बाड़मेर में अध्ययनरत था।

कल्याणसिंह पुत्र शैतानसिंह जैसिन्धर (बाड़मेर) आरबीएसई 12वीं कला में 78.20 प्रतिशत। यह छात्र मोहन गुरुकुल छात्रावास बाड़मेर में अध्ययनरत था।

मोडसिंह पुत्र मेघराजसिंह लुणु (बाड़मेर) आरबीएसई 12वीं विज्ञान में 76.00 प्रतिशत। यह छात्र मोहन गुरुकुल छात्रावास बाड़मेर में अध्ययनरत था।

भूपालसिंह पुत्र दलपतसिंह इन्द्रोई (बाड़मेर) आरबीएसई 12वीं विज्ञान में 79.40 प्रतिशत। यह छात्र मोहन गुरुकुल छात्रावास बाड़मेर में अध्ययनरत था।

कमलसिंह पुत्र नरपतसिंह आंटा (बाड़मेर) आरबीएसई 12वीं विज्ञान में 75.80 प्रतिशत। यह छात्र मोहन गुरुकुल छात्रावास बाड़मेर में अध्ययनरत था।

माया कंवर पुत्री गेमरसिंह हमीरा (जैसलमेर) सीबीएसई 12वीं विज्ञान वर्ग में 90.40 प्रतिशत।

कल्याणसिंह पुत्र बालसिंह हाथमा (जैसलमेर) 12वीं कला वर्ग में 82.60 प्रतिशत।

अरविन्द सिंह पुत्र मेहरसिंह काठाड़ी (बाड़मेर) 12वीं विज्ञान वर्ग में 84.60 प्रतिशत।

लक्ष्मणसिंह पुत्र जोरावरसिंह सियाणा (जालोर) 12वीं कला वर्ग में 81.20 प्रतिशत।

गजेन्द्र कंवर पुत्री नारायणसिंह देलदरी (जालोर) आरबीएसई 12वीं कला वर्ग में 85 प्रतिशत।

पृथ्वीराजसिंह पुत्र जगतावरसिंह चांदणा (जालोर) सीबीएसई 12वीं विज्ञान वर्ग में 83.40 प्रतिशत।

लोकेन्द्रसिंह पुत्र देवीसिंह छानेरी आरबीएसई 12वीं की परीक्षा में 94.40 प्रतिशत अंक हासिल किए।

कमलसिंह पुत्र स्व. अभय सिंह चांदणा आरबीएसई 12वीं विज्ञान की परीक्षा में 83.80 प्रतिशत।

नरपतसिंह पुत्र नारायणसिंह मूंगेरिया (बाड़मेर) 12वीं आरबीएसई में 93.40 प्रतिशत अंक एवं जेइइ एडवांस में चयन, 3848वीं रैंक।

गुलाबसिंह पुत्र अर्जुनसिंह दूजासर (जैसलमेर) आरबीएसई 12वीं कला में 79.60 प्रतिशत। यह छात्र मोहन गुरुकुल छात्रावास बाड़मेर में अध्ययनरत था।

दामिनी कंवर चौहान पुत्री माधोसिंह चौहान करणवा पाली ने मेडिकल शिक्षा की प्रवेश परीक्षा नीट 2018 को क्वालिफाई किया है। इन्होंने संघ के 4 शिविर कर रखे है।

अंशुमानसिंह पुत्र स्व. विजयसिंह राठौड़ गांव लूंछ, चुरू। जेईई एडवान्स 2018 में 1022वीं रैंक, हाल बीकानेर।

(पृष्ठ दो का शेष)

जीवनोपयोगी...

नेतृत्व एवं त्वरित निर्णय क्षमता के साथ उसका तकनीकी रूप से दक्ष होना भी आवश्यक है। इन्हीं कारणों से पायलट बनने की प्रक्रिया अत्यन्त कठिन होती है। प्रवेश परीक्षा तथा मेडकिल जांच में योग्य सिद्ध होने के बाद विद्यार्थी को DGCA द्वारा अधिकृत फ्लाइंग स्कूल में प्रवेश मिलता है जहां उसे सैद्धांतिक व प्रायोगिक परीक्षण प्रदान किया जाता है। इसके पश्चात उसकी पुनः लिखित व मौखिक परीक्षा होती है, जिसे उत्तीर्ण करने पर DGCA द्वारा स्टूडेंट पाटलट लाइसेंस प्रदान किया जाता है। इसके पश्चात् पुनः कड़े प्रशिक्षण से गुजरना होता है तथा पर्याप्त उड़ान अनुभव के पश्चात् DGCA द्वारा पुनः परीक्षा ली जाती है, जिसे उत्तीर्ण करने पर कॉमर्शियल पायलट लाइसेंस प्राप्त होता है। यद्यपि फ्लाइंग स्कूल में प्रशिक्षण प्राप्त करना अत्यन्त महंगा है, जिसमें लगभग 20-30 लाख रुपए खर्च होते है, किन्तु पायलट बनने के पश्चात् वेतनमान भी उच्च होता है, जिसमें प्रारम्भिक वेतन 1-3 लाख प्रतिमाह तक होता है, जो अनुभव प्राप्त करने के बाद बढ़ता है।

2. सैन्य पायलट : इसके अन्तर्गत भारतीय वायुसेना में पायलट बनने का अवसर प्राप्त होता है। इसके लिए भी गणित विषय वर्ग अनिवार्य है तथा दो प्रकार की एयरफोर्स अकेडमी में प्रवेश मिल सकता है। प्रथम 12वीं कक्षा के पश्चात् NDA की परीक्षा द्वारा तथा द्वितीय स्नातक अथवा इंजीनियरिंग के पश्चात् CDS या AFCAT परीक्षा द्वारा। एयरफोर्स में पायलट बनकर लडाकू विमान, हेलीकाप्टर या ट्रांसपोर्ट विमान उड़ाने का अवसर मिलता है तथा सेवानिवृत्ति के पश्चात् नागरिक उड्डयन सेवाओं में भी प्रचुर अवसर उपलब्ध हैं।

आजादसिंह बने आरसीए के कोषाध्यक्ष

बाड़मेर के युवा व्यवसायी एवं राजनीतिज्ञ आजादसिंह राठौड़ को आरसीए का कोषाध्यक्ष बनाया गया है। आरसी चुनावों में पहले आजाद बहुत कम अन्तर से हारे थे लेकिन कोषाध्यक्ष चुने गए व्यक्ति द्वारा नामांकन के साथ प्रस्तुत किए गए दस्तावेजों की जांच में वैध नहीं पाए जाने के कारण उसका नामांकन रद्द कर दिया गया और आजादसिंह को निर्विरोध कोषाध्यक्ष घोषित किया गया है।

ग्रेसी कंवर राजवी ने गौरव बढ़ाया

राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा आयोजित विज्ञान वर्ग की 12वीं कक्षा की परीक्षा में ग्रेसी राजवी ने 96.20 प्रतिशत अंक प्राप्त कर सरदारशहर तहसील में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। ग्रेसी राजवी भवानीसिंह डालमाण (विकास अधिकारी, पंचायत समिति सरदारशहर) की सुपुत्री है। आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय सरदारशहर की इस छात्रा ने पीसीबी में सर्वाधिक अंक (99.67 प्रतिशत) प्राप्त किए हैं, जिसके लिए छात्रा को राज्य सरकार की ओर से एक लाख रुपए देकर पुरस्कृत व सम्मानित किया जाएगा। क्षत्रिय समाज की विभिन्न संस्थाओं द्वारा भी सम्मानित करने का निर्णय लिया गया है।

अनिरुद्ध देव को कांस्य पदक

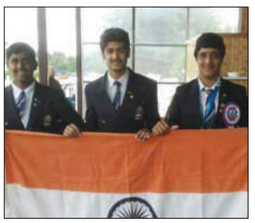

जालोर के पोसाणा गांव निवासी अनिरुद्ध देव सिंह ने रूस के सेंट पीटर्सबर्ग शहर में आयोजित अंतरराष्ट्रीय जुनियर इक्वेस्ट्रियन की व्यक्तिगत स्पर्धा में तीसरा स्थान प्राप्त कर कांस्य पदक जीता है। इक्वेस्ट्रियन शो में भारतीय टीम को चौथा स्थान मिला, उसमें भी अनिरुद्ध की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही।

कैलाश कंवर का जिले में दूसरा स्थान : जैसलमेर के सांकड़ा गांव की **कैलाश कंवर** सुपुत्री कंवराजसिंह ने आरबीएसई के दसवीं कक्षा की परीक्षा में 95.17 प्रतिशत अंक हासिल कर जिले में दूसरा स्थान पाया है। गांव की सरकारी स्कूल में पढ़ने वाली कैलाश की इस उपलब्धि पर सभी गौरवान्वित महसूस कर रहे है एवं बधाइयां प्रेषित कर रहे है।

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

ॐ
श्री योगेश्वर छात्रावास
घर से दूर, घर जैसा वातावरण
अनेकान्त कॉलोनी, कुचामन सिटी (नागौर) राज.
हॉस्टल की विशेषताओं पर एक नजर :
1. कक्षा 3 से 12वीं के विद्यार्थियों हेतु सीमित स्थान।
2. अनुशासित एवं नियमित दिनचर्या।
3. शिक्षा के साथ संस्कार निर्माण पर बल।
4. वरिष्ठ जनों का मार्गदर्शन।
5. शुद्ध, पौष्टिक एवं सात्विक आहार।
6. सभी प्रमुख शिक्षण संस्थानों के समीप स्थित।
7. सद्साहित्य, समाचार पत्रों व सामाजिक पत्र-पत्रिकाओं की व्यवस्था।
8. सभी सुविधाओं युक्त भवन।
9. कमजोर छात्रों हेतु विशेष शिक्षण व्यवस्था।

किसी भी अन्य हॉस्टल में प्रवेश से पूर्व एक बार हमारे हॉस्टल में Visit अवश्य करें।
नत्थुसिंह छापड़ा 9772097087 7073305111
शिवराजसिंह आसरवा 9929668333 7976332203

दो दिवसीय भ्रमण आयोजित

जोधपुर संभाग के 23 स्वयंसेवकों ने 2 व 3 जून को दो दिवसीय भ्रमण का आयोजन किया जिसमें कुंभलगढ़, हल्दीघाटी एवं माउंट आबू का भ्रमण किया गया। तीनों स्थानों के ऐतिहासिक स्थलों का निरीक्षण कर इतिहास के गौरवशाली पलों को याद करने का प्रयास किया गया। हल्दीघाटी म्यूजियम देखने के पश्चात् चेतक की समाधि पर पूज्य तनसिंह जी द्वारा रचित निबंध 'चेतक की समाधि' से का पठन किया कर पूज्य श्री की पीड़ा को महसूस करने का प्रयत्न किया। 2 जून को रात्रि विश्राम माउंट आबू में किया। यहीं गुजरात के स्वयंसेवक जगतसिंह वलासना परिवार सहित मिले तो विशाल सांघिक परिवार के पारिवारिक भाव के स्पंदन का अवसर मिला। 3 जून को माउंट आबू के दर्शनीय स्थलों को देखकर यात्रा का समापन किया। यात्रा के दौरान बस में चले सहगायनों के दौर ने माहौल को संघमय बनाए रखा एवं एक प्रा.प्र.शि. भी तय किया गया। यात्रा का संयोजन वयोवृद्ध सहयोगी रघुनाथसिंह खिरजां, इंदावाटी राणोसा प्रतापसिंह के निर्देशन में भैरूसिंह बेलवा, नरपतसिंह बस्तवा आदि ने किया।

भाजपा के खिला आंदोलन की घोषणा

सर्व राजपूत समाज संघर्ष समिति राजस्थान ने 12 जून को प्रेस विज्ञप्ति जारी कर भाजपा के खिलाफ 'कमल का फूल हमारी भूल' आंदोलन को जयपुर में वसुंधरा धिक्कार रैली की घोषणा की है। 24 जून को सामाजिक सद्भावना दिवस के साथ शुरुआत होगी। 25 जून को जैसलमेर में वसुंधरा धिक्कार सम्मेलन से तहसील एवं जिला स्तर पर ऐसे सम्मेलनों की श्रृंखला प्रारम्भ की जाएगी। प्रेस विज्ञप्ति में सरकार की बेरुखी एवं द्वेषतापूर्ण कार्रवाई के प्रति आक्रोश जताया गया।

हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं
माया कंवर
पुत्री **श्री गेमरसिंह हमीरा** (जैसलमेर)
के **बारहवीं विज्ञान वर्ग (सीबीएसई)** में
90.40 प्रतिशत अंक बनाने एवं विख्यात
'दक्षिणा फाउंडेशन पूणे-2018' में
चयनित होने पर हार्दिक बधाई एवं उत्तरोत्तर प्रगति की शुभकामनाएं

माया कंवर

शुभेच्छु : बाबूसिंह पुत्र शिवदानसिंह जी सोनू (जैसलमेर)। हाल-सूरत

हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं
सुश्री आयुषि कंवर चौहान
पुत्री **जयपालसिंह** निवासी आडवाड़ा (जालोर)
के **बारहवीं कला वर्ग (आरबीएसई)** में
86.60 प्रतिशत अंक बनाने पर हार्दिक बधाई एवं उत्तरोत्तर प्रगति की शुभकामनाएं

आयुषि कंवर चौहान

शुभेच्छु : ठा. नारायणसिंह जी, मानसिंह जी (दादोसा), जयपालसिंह (पिताजी) एवं चौहान परिवार आडवाड़ा

अलख नयन मंदिर
नेत्र संस्थान
City Centre
अब आपकी सेवा में

आंखों से सम्बन्धित रोगों के निदान का विश्वसनीय केन्द्र
• केटरेक्ट एंड रिफ्रेक्टिव सर्जरी • कॉन्टेक्ट लेंस क्लिनिक
• रेटिना • कॉर्निया
• ग्लूकोमा • अल्प दृष्टि उपकरण • बाल नेत्र चिकित्सा
• भैंगापन • आई बैंक व प्रत्यारोपण केन्द्र
सुपर स्पेशिलाइज एवं अनुभवी नेत्र विशेषज्ञ
डॉ. एल.एस. झाला | डॉ. विनीत आर्य | डॉ. शिवानी चौहान
डॉ. साकेत आर्य | डॉ. नितिश खतुरिया | डॉ. गर्व बिश्नाई
• शिक्षण (PG Ophthalmology) व (Hands-on) प्रशिक्षण संस्थान
• निःशुल्क अति विशिष्ट नेत्र चिकित्सा (जरूरतमंद रोगियों के लिए फ्री आई केयर)

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 (दूरभाष: 2466353 व 2466387) से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com , Web site:- www.shrikys.org